लौकिक एवं अलौकिक सुख

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

लौकिक सुख सांसारिक सुख है। संसार से मिलने वाला सुख लौकिक सुख कहलाता है। इसके अन्तर्गत कंचन कामिनी का सुख, धन सम्पत्ति का सुख, दुकान, मकान का सुख, पुत्र–पौत्रादि का सुख तथा इसी प्रकार के अन्य सुख हैं। इन्हें भौतिक सुख कहा जाता है। इसके अतिरिक्त अलौकिक सुख है। अलौकिक सुख आत्मसंतोष और आत्मा का सुख है। यह शास्वत् सुख है। इस सुख के सामने भौतिक सुख बिन्दुमात्र है। इस सुख के प्राप्त हो जाने पर अन्य सुख नगण्य हो जाते हैं। मानव बाह्य और भीतरी जगत में रहता है। बाह्य जगत पंचेन्द्रियों का जगत है। इन्द्रियों के माध्यम से बाह्य संसार के सुख का अनुभव किया जाता है। बाह्य जगत से इन्द्रियां विषयों को लेकर मन को देती है। मन चिन्तन–मनन करता है। आंतरिक जगत में सत्य की अनुभूति होती है। भीतरी जगत में कुदरत का कानून चलता है। सनातन सत्य को जानने के लिए भीतर के जगत में जाना पड़ता है। लौकिक सुख नश्वर है। वह देखते–देखते नष्ट हो जाता है। इसे पौद्गलिक सुख कहा जाता है। इसमें उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य चलता रहता है। जब आदमी का पुण्योदय होता है तो भौतिक सुख की प्राप्ति होती है।

लौकिक जगत में प्राप्त सुख पुण्योदय का परिणाम है और दुःख पापोदय का परिणाम है। मनुष्य भव–भवान्तर से कर्मों को अर्जित करता रहता है। कौनसा कर्म कब उदय में आ जाएगा इसका पता नहीं रहता। परिणामों से अच्छे और बुरे कर्म का अनुमान कर लिया जाता है। जब शरीर को या परिवार को कष्ट प्राप्त होता है तो यह समझना चाहिए कि यह पापोदय का परिणाम है। भारतीय संस्कृति पुरूषार्थ चतुष्टय में विश्वास करती है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जीवन के चार पुरूषार्थ हैं। अर्थ और काम लौकिक जीवन से सम्बन्धित है। धर्म और मोक्ष अलौकिक जगत से सम्बन्धित है। इनके माध्यम से मानव अपना जीवन व्यतीत करता है। शुद्ध आत्मा से शरीर का कोई सम्बन्ध नहीं है। लौकिक जगत में राग–द्वेष है। अलौकिक जगत में

केवल शान्ति है। वहां पर आत्माराम की अनुभूति होती है। लौकिक सुख व्यावहारिक है। आध्यात्मिक सुख अलौकिक है।

जीवन के दो पक्ष हैं– आतंरिक एवं बाह्य। बाह्य पक्ष वह पक्ष है जो हम एक–दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं। पंच इन्द्रियों का जगत बाह्य पक्ष है। इन्द्रियों के द्वारा संसार में भोग विलास किया जाता है। यह भौतिक पदार्थों का जीवन है। इन्द्रिया बाह्य विषयों को ग्रहण कर मन को देती है। मन इन्हें नियोजित करता है। मानव द्वारा जितने भी क्रिया–कलाप किये जाते हैं वह सब बाह्य जगत में घटित होता हे। बाह्य जगत के लिए मानव पदार्थ में लोलुप होता है। मनुष्य के वाणी में विष और अमृत दोनों हैं। जब इससे अमृत निकलता है तो यह सबको मित्र बना लेती है किन्तु जब विष निकलता है तो सबको शत्रु बना देती है। भीतरी जगत प्रबंधन का जगत है। भीतरी जगत सूक्ष्म जगत है। बाह्य जगत स्थूल जगत है। भीतरी जगत से ही बाह्य जगत संचालित होता है।

पवित्रता, शुद्धता, स्वच्छता मानव जीवन को ऊँचा उठाने के लिए एक महत्वपूर्ण सद्गुण है। अनेक लोग स्वच्छता अथवा सफाई का अर्थ केवल ऊपर की टीपटाप, आकर्षक श्रृंगार या बढ़िया फैशन को समझते है। कुछ लोगों की दृष्टि में सुन्दर वस्त्र, आभूषण, प्रसाधन सामग्री का उपयोग करना सफाई और सौन्दर्य का प्रमाण समझा जाता है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो शरीर और वस्तुओं की अधिक सफाई सौन्दर्य की वृद्धि आदि बातों को सांसारिक प्रपंच मानकर इनकी उपेक्षा करने में ही सफलता का अनुभव करते है। पर ये सभी दृष्टिकोण एकांगी है। कुछ लोग विलास प्रियता का श्रृंगार के भाव से ही स्वच्छता और सफाई करते है। ये भी संभव है कि कुछ लोग अपना वैभव न प्रकट करने के दृष्टिकोण से सफाई पर ध्यान देते है। इससे स्वच्छता की प्रवृत्ति को अनावश्यक या अनुकरणीय नहीं माना जा सकता। वास्तव में स्वच्छता एवं पवित्रता एक ही उच्च मनोवृत्ति के रूप है और दोनों का स्वरूप मन प्रसन्न तथा आत्मा को शांत करने में इनका बड़ा योग रहता है।

बाह्य स्वच्छता और पवित्रता से अन्तःकरण की पवित्रता की भी वृद्धि होती है। मन में अशुद्ध भावों का उदय होना स्वयं ही कम हो जाता है। पवित्रता और स्वच्छता से मनुष्य की श्रेष्ठता और सुखी होने का परिचय मिल जाता है। हमारे देश में ऐसे संत पाये जाते है जो सब तरह

से बुरा काम करने में ही आध्यात्मिकता समझते है। सर्वसाधारण भी उनको परम आत्म ज्ञानी समझकर पूजनीय मान लेता है। पर यह उनका भ्रम या अज्ञान ही है। मनुष्य के विकास और आध्यात्मिकता का प्रमाण केवल ज्ञान और भक्ति की बाते करने से नहीं मिल सकता। मनुष्य जो कुछ कहता है। उसका प्रमाण उसके व्यावहारिक जीवन में ही मिल सकता है। संसार के लोग सुदरता के बड़े प्रेमी बनते है। क्या साधारण ग्रामीण और क्या नगर निवासी रईस सभी सुंदरता के प्रशंसक और चाहने वाले होते है। पर उनकी सुन्दरता की रूचि या कसौटी पृथक–पृथक होती है। एक बात तो सबको माननी पड़ती है कि सुन्दरता में स्वच्छता और निर्मलता का समावेश अवश्य होना चाहिए। संसार में सभी सुन्दरता चाहते है। परन्तु वास्तविक सौन्दर्य का ज्ञान तो किसी–किसी बुद्धिमान विवेकी मानव को ही होता है। जो मलयुक्त है, दोषयुक्त है, वही असुंदर है।